जन-जन के, मन-मन के,
हम सब के भगवान् महावीर

महावीर-स्वामी,
नयन-पथ-गामी भवतु में...

श्री महावीराष्टक दीपार्चनम्

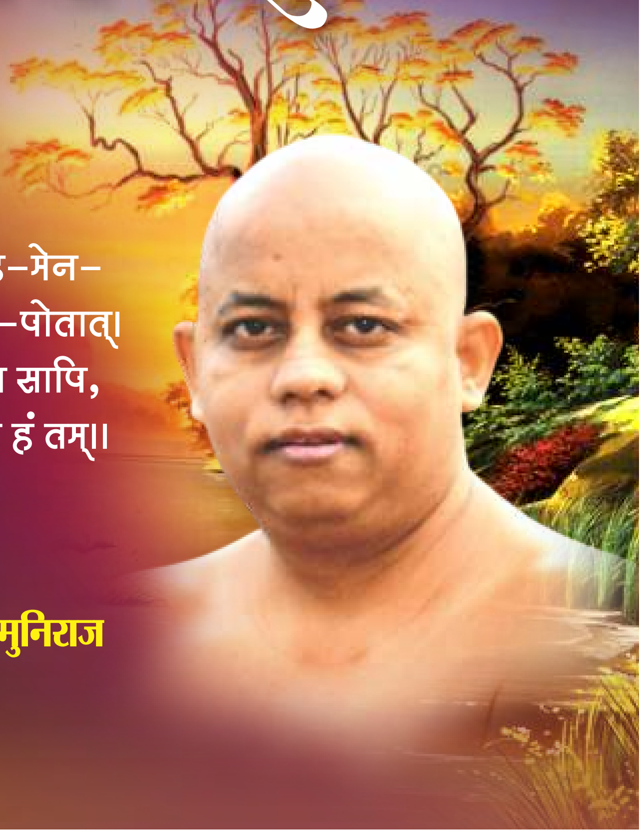

भवार्णवि–जन्तु–समूह–मेन–
माकर्ष–यामास हि धार्म–पोतात्।
मज्जन्त–मुद्वीक्ष्य येन सापि,
श्री–वर्द्धमान प्रणमाम्य हं तम्।।

प्रस्तुति संपादन
परम्पराचार्य श्री प्रज्ञसागर मुनिराज

श्री महावीर सिद्धि यन्त्र (1)

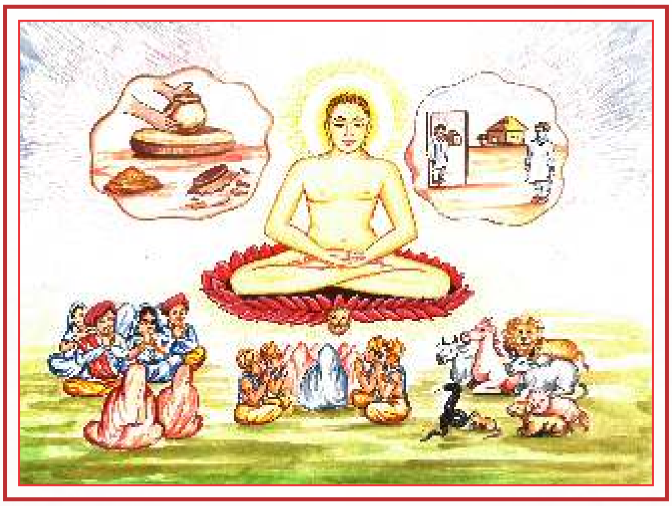

अर्थ – जिनके चैतन्य रूप ज्ञान में ध्रौव्य, व्यय और उत्पाद युक्त अनन्त चेतन और अचेतन पदार्थ, दर्पण के समान एक साथ प्रतिबिम्बित होते हैं, संसार के साक्षात्कार करने वाले सूर्य के समान जो मोक्ष मार्ग को बताने में तत्पर हैं, ऐसे वे महावीर स्वामी मेरे/हम सभी के नेत्रों के पथगामी होवें।

पं. भागचन्द्र जी विरचित

श्री महावीराष्टक दीपार्चनम्

अज्ञान तिमिर नाशक, बुद्धि वृद्धि कारक
Destroyer of ignorance, intelligence booster

(शिखरिणी छन्द)

यदीये चैतन्ये, मुकुर इव भावाश्चि-दचितः,
समं भान्ति ध्रौव्य-व्यय-जनि-लसन्तोऽन्त-रहिताः।
जगत्साक्षी मार्ग-प्रकटन-परो-भानु-रिव यो,
महावीर-स्वामी, नयन-पथ-गामी भवतु मे (नः) ।।1।।

ऋद्धि मन्त्र : ॐ ह्रीं अर्हं नमो अष्टादश-बुद्धि-ऋद्धि-सम्पन्नाय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय नमः सर्वशान्ति-र्भवतु स्वाहा।

दीपार्चन मन्त्र : ॐ ह्रीं अर्हं णमो अट्ठादस-बुद्धी-रिद्धि-संपण्णाणं, क्लीं महाबीजाक्षर-सहिताय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अज्ञान-तिमिर-विनाशनाय केवलज्ञान-प्राप्ताय दीपार्चनं करोमि स्वाहा।।1।।

****

जिन्हों की प्रज्ञा में, मुकुर-सम चैतन्य जड़ भी,
सदा ध्रौव्योत्पाद्-स्थितियुत सभी साथ झलकें।
जगत्साक्षी मार्ग-प्रकटन-विधाता तरणि ज्यों,
महावीर स्वामी, नयन-पथ-गामी सतत हो।।1।।

In Omniscience mirror, objects resemble at once,
Associated with, generation, exaust permanence,
Who indicates us the, path of salvation like a Sun,
Such a lord Mahavir, resides always in my eyes.

श्री महावीर सिद्धि यन्त्र (2)

अर्थ – जिनके दोनों नयन कमल, लालिमा से रहित, पलक झपकने से रहित हैं, जो मनुष्यों को अन्तरंग में भी अथवा बहिरंग में भी क्रोध के अभाव को प्रकट करते हैं, जिनकी आकृति स्पष्ट रूप से परमशान्ति से युक्त और अत्यन्त निर्मल है, वे महावीर स्वामी मेरे/हम सभी के नेत्रों के पथगामी होवें।

अशुद्ध दर्शन नाशक, नेत्र ज्योति प्रदायक
Destroyer of impure vision, provider of eye sight

अताम्रं यच्चक्षुः, कमल-युगलं स्पन्द-रहितं,
जनान्कोपापायं, प्रकटयति वाभ्यन्तर-मपि।
स्फुटं मूर्ति-र्यस्य, प्रशमित-मयी-वाति-विमला,
महावीर-स्वामी, नयन-पथ-गामी भवतु मे (नः) ।।2।।

ऋद्धि मन्त्र : ॐ ह्रीं अर्हं नमो नव-चारण-ऋद्धि-सम्पन्नाय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय नमः सर्वशान्ति-र्भवतु स्वाहा।

दीपार्चन मन्त्र : ॐ ह्रीं अर्हं णमो णव-चारण-रिद्धि-संपण्णाणं, क्लीं महाबीजाक्षर-सहिताय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अशुद्ध-दर्शन-विनाशनाय केवलदर्शन-प्राप्ताय दीपार्चनं करोमि स्वाहा।।2।।

****

जिन्हों की नेत्राभा, अचल अरुणाई-रहित हो,
सुझाती भक्तों को, हृदयगत क्रोधादि-शमता।
विशुद्धा सौम्या आकृति अमित ही भव्य लगती,
महावीर स्वामी, नयन-पथ-गामी सतत हो।।2।।

Devoid of reddishness, whose eyes do not used to blink,
I lluminated the, state of angerlessness,
He - whose posture is, pure and a holder of peace,
Such a lord Mahavira, resides always in my eyes.

श्री महावीर सिद्धि यन्त्र (3)

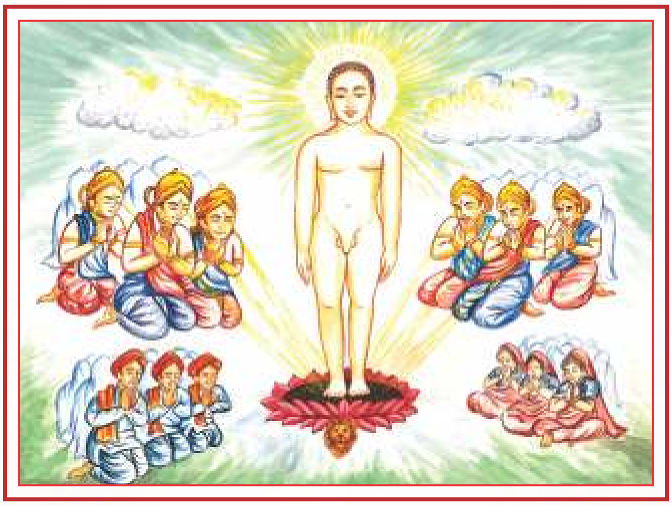

अर्थ – नमन करते हुए देवेन्द्रों के समूह के मुकुटों की मणियों के प्रभा समूह से व्याप्त जिनके दोनों चरण कमल सुशोभित होते हैं, ऐसे वे इस लोक में जिनका स्मरण भी शरीर धारियों की संसार रूपी ज्वाला की शान्ति के लिये जल के समान समर्थ हैं, वे महावीर स्वामी मेरे/हम सभी के नेत्रों के पथगामी होवें।

इन्द्रिय सुख–दुःखाभाष नाशक, अक्षय सम्पदा कारक
Destroyer of sensory pleasure and pain, inexhaustible wealth factor

नमन्नाकेन्द्राली–मुकुट–मणि–भा–जाल–जटिलं।
लसत्पादाम्भोज–द्वय–मिह यदीयं तनुभृताम्।
भवज्वाला–शान्त्यै, प्रभवति जलं वा स्मृत–मपि,
महावीर–स्वामी, नयन–पथ–गामी भवतु मे (नः) ।।3।।

ऋद्धि मन्त्र : ॐ ह्रीं अर्हं नमो त्रि–बल–ऋद्धि–सम्पन्नाय श्रीमहावीर–जिनेन्द्राय नमः सर्वशान्ति–र्भवतु स्वाहा।

दीपार्चन मन्त्र : ॐ ह्रीं अर्हं णमो ति–बल–रिद्धि–संपण्णाणं क्लीं महाबीजाक्षर–सहिताय श्रीमहावीर–जिनेन्द्राय इन्द्रिय–सुख–दुःखाभाष–विनाशनाय अव्याबाध–गुण–प्राप्ताय दीपार्चनं करोमि स्वाहा।।3।।

****

नमस्कर्ता इन्द्र–प्रभृति अमरों के मुकुट की,
प्रभा श्रीपादाम्भो–रुह–युगल–मध्ये झलकती।
भव–ज्वालाओं का, शमन करते वे स्मरण से,
महावीर स्वामी, नयन–पथ–गामी सतत हो।।3।।

By bowing down head, in whose twice lotus feet,
The crown of deities, splendid with light of a gem,
Even his remembrance, becomes the water to rest flame,
Such a lord Mahavira, resides always in my eyes.

श्री महावीर सिद्धि यन्त्र (4)

अर्थ – जिनकी पूजा के भाव से हर्षित चित्त वाला मेढक इस लोक में क्षण भर में अणिमा–महिमा आदि गुणों के समूह से सम्पन्न सुख का निधान स्वर्ग का देव हो गया था। फिर सच्चे भक्तजन मोक्षसुख के समूह को प्राप्त होते हैं तो इसमें आश्चर्य की क्या बात है, वे महावीर स्वामी मेरे/हम सभी के नेत्रों के पथगामी होवें।

मोहान्धकार नाशक, सर्वकार्य–सिद्धि कारक
Destroyer of delusion, factor of accomplishment

यदर्चा–भावेन, प्रमुदित–मना – दर्दुर – इह,
क्षणादासीत्–स्वर्गी, गुण–गण–समृद्धः सुख–निधिः।
लभन्ते सद्भक्ताः, शिव–सुख–समाजं किमु तदा,
महावीर–स्वामी, नयन–पथ–गामी भवतु मे (नः) ॥4॥

ऋद्धि मन्त्र : ॐ ह्रीं अर्हं नमो एकादश–विक्रिया–ऋद्धि–सम्पन्नाय श्रीमहावीर–जिनेन्द्राय नमः सर्वशान्ति–र्भवतु स्वाहा।

दीपार्चन मन्त्र : ॐ ह्रीं अर्हं णमो एगादस–विक्किया–रिद्धि–संपण्णाणं, क्लीं महाबीजाक्षर–सहिताय, श्रीमहावीर–जिनेन्द्राय मोहान्धकार–विनाशनाय अनन्तसुख–प्राप्ताय दीपार्चनं करोमि स्वाहा॥4॥

****

जिन्हों की अर्चा से, मुदित–मन हो दर्दुर कभी,
हुआ था स्वर्गी तत्क्षण सुगुण–धारी अति सुखी।
शिवश्री के भागी, यदि सुजन हो तो अति कहाँ,
महावीर स्वामी, नयन–पथ–गामी सतत हो॥4॥

By whose volition of, worship a pleased mind frog.
Became the deity in, heaven by his qualities,
No strange if devotees, attain to salvation worshipping you,
Such a lord Mahavira, resides always in my eyes.

श्री महावीर सिद्धि यन्त्र (5)

अर्थ – तपाये हुये स्वर्ण के समान कान्ति वाले होते हुए भी स्वर्ण की भाँति शरीर से रहित हो, अनेक आत्मा होकर भी अद्वितीय हो, जन्म से रहित होकर भी महाराज सिद्धार्थ के पुत्र हो, बहिरंग लक्ष्मी से युक्त होकर भी सांसारिक राग से रहित होकर ज्ञानापुंज हैं, वे महावीर स्वामी मेरे/हम सभी के नेत्रों के पथगामी होवें।

जन्म रोग नाशक, आरोग्यता कारक
Destroyer of birth killer, curative agent

कनत्स्वर्णाभासोऽ-प्यगत-तनु-र्ज्ञान-निवहो,
विचित्रात्माप्येको, नृपति-वर-सिद्धार्थ-तनयः।
अजन्मापि श्रीमान्, विगत-भव-रागोऽद्‌भुत-गतिर्-,
महावीर-स्वामी, नयन-पथ-गामी भवतु मे (नः) ।।5।।

ऋद्धि मन्त्र : ॐ ह्रीं अर्हं नमो सप्त-तप-ऋद्धि-सम्पन्नाय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय नमः सर्वशान्ति-र्भवतु स्वाहा।

दीपार्चन मन्त्र : ॐ ह्रीं अर्हं णमो सत्त-तप-रिद्धि-संपण्णाणं, क्लीं महाबीजाक्षर-सहिताय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय जन्म-रोग-विनाशनाय सूक्ष्मत्व-गुण-प्राप्ताय दीपार्चनं करोमि स्वाहा।।5।।

****

तपे सोने-जैसे, तनु-रहित भी ज्ञान गृह है,
अकेले नाना भी, जनि-रहित सिद्धार्थ-सुत है।
महाश्री के धारी, विगत-भव-रागी अति-गति,
महावीर स्वामी, नयन-पथ-गामी सतत हो।।5।।

He-who is bodiless, though having brightness like a gold,
is only one even, having so many qualities,
Devoid of birth and, whose attachment has gone,
Such a lord Mahavira, resides always in my eyes.

श्री महावीर सिद्धि यन्त्र (6)

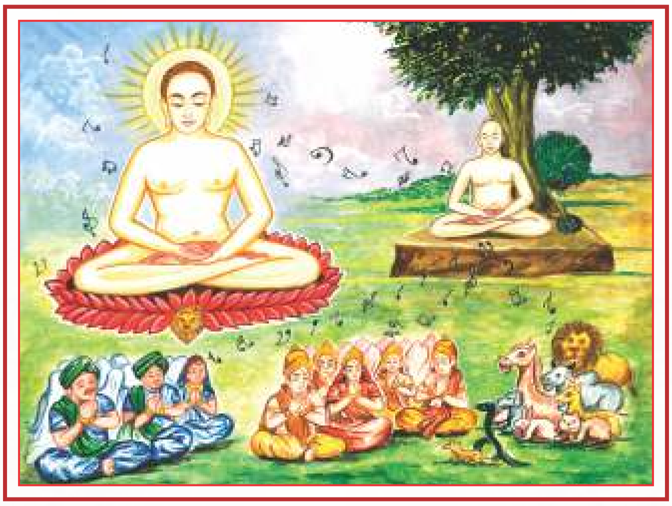

अर्थ – जिनकी वाणी रूपी गंगा अनेक नयरूप तरंगों से उज्ज्वल विपुल/अत्यधिक ज्ञानरूप जल से इस लोक में प्राणियों का अभिषेक करके उनके सन्ताप को शान्त करती है और आज भी वर्तमान काल में भी यह गंगा विद्वज्जन रूपी हंसों से परिचित हो रही हैं, वे महावीर स्वामी मेरे/हम सभी के नेत्रों के पथगामी होवें।

नानाविध शरीर रचना नाशक, परम सौन्दर्य कारक
Various body composition destroyers, ultimate beauty factor

यदीया वाग्गङ्गा, विविध-नय-कल्लोल-विमला,
बृहज्ज्ञानाम्भोभि-र्जगति-जनतां या स्नपयति।
इदानी-मप्येषा, बुध-जन-मरालैः परिचिता,
महावीर-स्वामी, नयन-पथ-गामी भवतु मे (नः) ।।6।।

ऋद्धि मन्त्र : ॐ ह्रीं अर्हं नमो अष्टौषधि-ऋद्धि-सम्पन्नाय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय नमः सर्वशान्ति-र्भवतु स्वाहा।

दीपार्चन मन्त्र : ॐ ह्रीं अर्हं णमो अट्ठ-ओसहि-रिद्धि-संपण्णाणं, क्लीं महाबीजाक्षर-सहिताय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय नानाविध-शरीर-रचना-विनाशनाय अवगाहनत्व-गुण-प्राप्ताय दीपार्चनं करोमि स्वाहा।।6।।

****

जिन्हों की वाग्गङ्गा, विविध-नय-कल्लोल-विमला,
न्हिलाती भक्तों को, विमल अति सद्ज्ञान जल से।
अभी भी सेते हैं, बुद्ध जन महाहंस जिसकी,
महावीर स्वामी, नयन-पथ-गामी सतत हो।।6।।

He-whose river of charming, preachings with stand points,
Used to give a bath, of special knowledge to the people.
And knows as the swans, like a learned, even today,
Such a lord Mahavira, resides always in my eyes.

श्री महावीर सिद्धि यन्त्र (7)

अर्थ – जिसने कुमार अवस्था में स्फुरायमान नित्य आनन्द वाले प्रशान्त शिवपद के राज्य को पाने के लिए अपने आत्म बल से जिसको जीतना बड़ा कठिन है, ऐसे वेग वाले/उद्रेक वाले तीनों लोकों को जीतने वाला कामरूपी महान योद्धा को जीता है, वे महावीर स्वामी मेरे/हम सभी के नेत्रों के पथगामी होवें।

गुरु–लघु भव पद नाशक, सर्वोत्तम पद दायक
Destroyer of complexes, bestower of Acme position

अनिर्वा–रोद्रेकस्–त्रिभुवन–जयी काम–सुभटः,
कुमारावस्थाया–मपि निज–बलाद्येन विजितः।
स्फुरन्–नित्यानन्द–प्रशम–पद–राज्याय स जिनः,
महावीर–स्वामी, नयन–पथ–गामी भवतु मे (नः) ।।7।।

ऋद्धि मन्त्र : ॐ ह्रीं अर्हं नमो चतुः रस–ऋद्धि–सम्पन्नाय श्रीमहावीर–जिनेन्द्राय नमः सर्वशान्ति–र्भवतु स्वाहा।

दीपार्चन मन्त्र : ॐ ह्रीं अर्हं णमो चदु–रस–रिद्धि–संपण्णाणं, क्लीं महाबीजाक्षर–सहिताय श्रीमहावीर–जिनेन्द्राय गुरु–लघु–भव–पद– विनाशनाय अगुरु–लघु–गुण–प्राप्ताय दीपार्चनं करोमि स्वाहा।।7।।

****

त्रिलोकी का जेता, मदन भट जो दुर्जय महा,
युवावस्था में भी, विदलित किया ध्यान–बल से।
महा–नित्यानन्द–प्रशम पद पाया जिन–पति,
महावीर स्वामी, नयन–पथ–गामी सतत हों।।7।।

He-who eye victory over, warrior of invincible lust,
In a bachelor stage, by his power of a self,
Just to rule over, energetic liberation,
Such a lord Mahavira resides always in my eyes.

श्री महावीर सिद्धि यन्त्र (8)

अर्थ – महान मोह के आतंक को सर्वथा शान्त करने में तत्पर आकस्मिक/अकारण वैद्य अपेक्षा रहित परम बन्धु सर्वविदित महिमा वाले मंगलकारक, संसार के भय से भरे हुए साधुजनों को शरण देने वाले, परमोत्कृष्ट गुणशाली हैं, वे महावीर स्वामी मेरे/हम सभी के नेत्रों के पथगामी होवें।

सर्वविघ्न–भय नाशक, अपराजित पद प्रदायक
Destroyer of fear, undefeated post supplier

महामोहातङ्क – प्रशमन – पराकस्मिक – भिषग्,
निरापेक्षो बन्धु–र्विदित–महिमा मङ्गलकरः।
शरण्यः साधूनां, भव–भय–भृता–मुत्तम–गुणो,
महावीर–स्वामी, नयन–पथ–गामी भवतु मे (नः) ।।8।।

ऋद्धि मन्त्र : ॐ ह्रीं अर्हं नमो द्वि–अक्षीण–ऋद्धि–सम्पन्नाय श्रीमहावीर–जिनेन्द्राय नमः सर्वशान्ति–र्भवतु स्वाहा।

दीपार्चन मन्त्र : ॐ ह्रीं अर्हं णमो दु–अखीण–रिद्धि–संपण्णाणं, क्लीं महाबीजाक्षर–सहिताय, श्रीमहावीर–जिनेन्द्राय सर्वविघ्न–भय–विनाशनाय अनन्त–बल–प्राप्ताय दीपार्चनं करोमि स्वाहा।।8।।

✻✻✻✻

महा–मोहातङ्क, प्रशम करने में विषग् हैं,
बिना इच्छा बन्धु, प्रथित जगकल्याण कर हैं।
सहारा भक्तों के, भवभय–भृतों के वर गुणी,
महावीर स्वामी, नयन–पथ–गामी सतत हों।।8।।

He-who is sudden doctor, to subside disease of delusion,
Who is unconcerned, and greatness is manifested,
Who used to do welfare, and refuge for frighteneds,
Such a lord Mahavira, resides always in my eyes.

श्री महावीर सिद्धि यन्त्र (9)

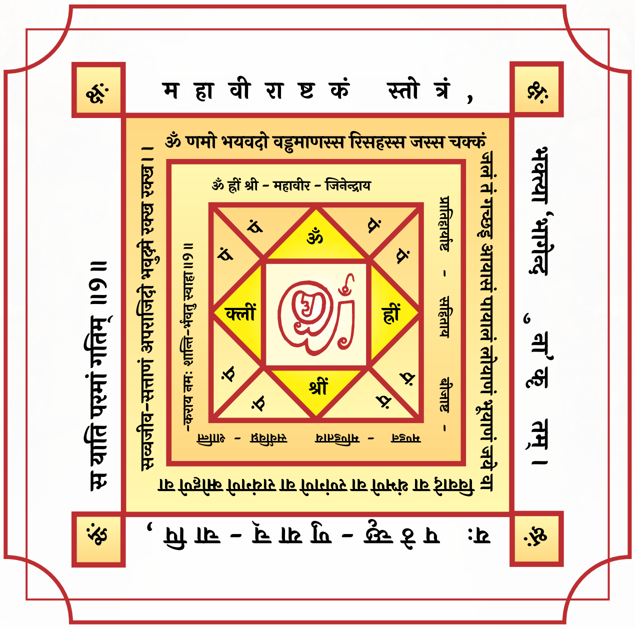

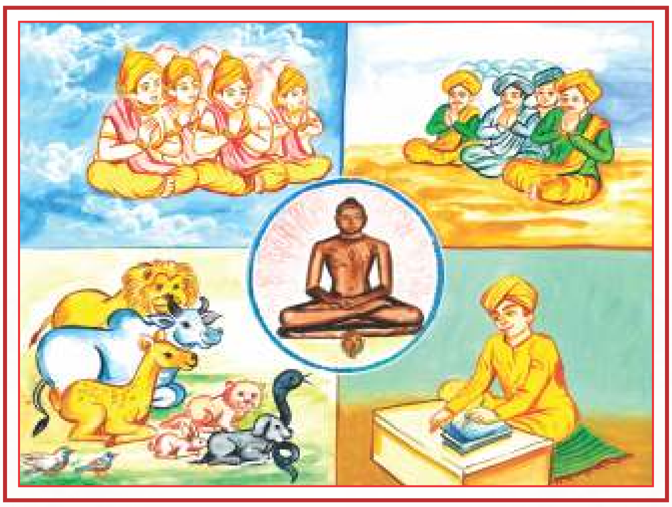

अर्थ – जो मनुष्य भागचन्द्र कवि द्वारा भक्ति पूर्वक रचित इन आठ श्लोकों का पद्यमय महावीराष्टक स्तोत्र को पढ़ता है अथवा सुनता है, वह उत्कृष्ट शिव गति को प्राप्त करता है/जाता है।

अष्ट कर्म नाशक, सर्व ऋद्धि-सिद्धि प्रदायक
Ashta Karma Destroyer, all Riddhi-Siddhi Provider

(अनुष्टुप छन्द)

महावीराष्टकं स्तोत्रं, भक्त्या 'भागेन्दुना' कृतम्।
यः पठेच्छृ-णुयाच्-चापि, स याति परमां गतिम्।।9।।

ऋद्धि मन्त्र : ॐ ह्रीं अर्हं नमो चतु:षष्टि-ऋद्धि-सिद्धि-सम्पन्नाय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय नमः सर्वशान्ति-र्भवतु स्वाहा।

दीपार्चन मन्त्र : ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्व-रिद्धि-सिद्धि-संपण्णाणं, क्लीं महाबीजाक्षर-सहिताय श्रीमहावीर-जिनेन्द्राय अष्टकर्म-दहनाय अनर्घ-पद-प्राप्ताय दीपार्चनं करोमि स्वाहा।।9।।

****

महावीराष्टक स्तोत्र यह, भक्तिवश भागेन्दु ने रचा।
इसे जो पढ़ेगा या कि सुनेगा, यह परमगति को प्राप्त होगा।।9।।

Eulogy of Mahavira, composed by a 'Bhagchand',
Who used to read-listen, attains to liberation.

कविवर द्यानतराय जी विरचित

श्री वर्द्धमान-आरती

करौं आरती वर्द्धमान की, पावापुर निरवान–थान की।। टेक।।

राग बिना सब जग–जन तारे, द्वेष बिना सब करम विदारे।
करौं आरती वर्द्धमान की, पावापुर निरवान–थान की।।

शील–धुरन्धर शिव–तिय–भोगी, मन–वच–काय न कहिये योगी।
करौं आरती वर्द्धमान की, पावापुर निरवान–थान की।।

रत्नत्रय–निधि परिग्रह–हारी, ज्ञान–सुधा–भोजन–व्रतधारी।
करौं आरती वर्द्धमान की, पावापुर निरवान–थान की।।

लोक–अलोक व्याप निज माही, सुखमय इन्द्रिय–सुख–दुःख नाही।
करौं आरती वर्द्धमान की, पावापुर निरवान–थान की।।

पञ्च कल्याणक–पूज्य विरागी, विमल दिगम्बर अम्बर त्यागी।
करौं आरती वर्द्धमान की, पावापुर निरवान–थान की।।

गुन–मुनि–भूषन–भूषित स्वामी, जगत उदास जगत्रय स्वामी।
करौं आरती वर्द्धमान की, पावापुर निरवान–थान की।।

कहै कहाँ लौ तुम सब जानौ, 'द्यानत' को अभिलाष प्रमानौ।
करौं आरती वर्द्धमान की, पावापुर निरवान–थान की।।

PULAK GRAPHICS (DELHI) 9810900699, 9810900042